AGRICULTURE REGIONS OF EXTRA-PENINSULA INDIA 5

भारत एक विशाल भूखण्ड है जिसका धरातल सभी भागों में भौतिक दृष्टि से समान नहीं है। इसके ऊँचावच और भौतिक स्वरूप में पर्याप्त विषमता मिलती है। एक अनुमान के अनुसार, देश के समूचे क्षेत्रफल का 10.6% पर्वतों, 18.5% पहाड़ियों, 27.7% पठारों एवं शेष 43.2% मैदानों के रूप में पाया जाता है।

भौतिक एवं भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत को 4 भागों में बांटा जा सकता है। यह अपनी भौतिक एवं भूवैज्ञानिक विशेषताओं में एक-दूसरे से पूर्णतः भिन्न है। भारत के इन 4 भूभागों में से जहाँ प्रथम दो विभागों के अपने भौतिक आधार हैं, वहीं प्रत्येक की अपनी-अपनी विशेषताएँ भी हैं क्योंकि इनके निर्माण, विकास एवं लक्षणों का आधार विशिष्ट भू-वैज्ञानिक कार्यक्रम से जुड़ा है। इनके 4 भौतिक विभाग निम्न हैं-

I → उत्तरी पर्वत
II → वृहत मैदान
III → प्रायद्वीपीय उच्चभूमि
IV → भारतीय तट एवं द्वीप।

II विशाल मैदान :—

यह मैदान प्रायद्वीपीय भारत को बाह्य-प्रायद्वीपीय भारत (Extra-Peninsular region) से अलग करता है। यह नवीनतम भूखण्ड है, जो हिमालय के उत्पत्ति के बाद बना है। यह सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का प्रमुख भाग है, जो कि भौगोलिक दृष्टि से एक खण्ड है जिसे भारत-पाकिस्तान-बंगलादेश के राजनीतिक विभाजन ने अलग कर दिया है। पश्चिम में सिंधु नदी का मैदान का अधिकांश भाग और पूर्व में गंगा ब्रह्मपुत्र डेल्टा का अधिकांश भाग आज हमारे देश से अलग हो गया है। इस विशाल मैदान का विस्तार पूर्व-पश्चिम लगभग 2400 Km है। इसका क्षेत्रफल 7 लाख वर्ग किलोमीटर है।

निर्माण :→ इस विशाल मैदान का निर्माण नदियों द्वारा बहाकर लाए गए निक्षेपों से हुआ है। यह निक्षेप काफी गहरे हैं, जिसकी मोटाई लगभग 1300-1400 m तक है। निम्न विद्वानों के अनुसार विशाल मैदान में, कॉप की गहराई में भिन्नता पाई जाती है। मैदान के उत्तरी भाग में इसकी गहराई 457 m है जो कि दक्षिण की ओर कम होती जा रही

→ ओल्डहम के अनुसार

"यह विशाल मैदान अपने उत्तरी भाग में बहुत अधिक गहरा है।"

→ बुर्राड के अनुसार

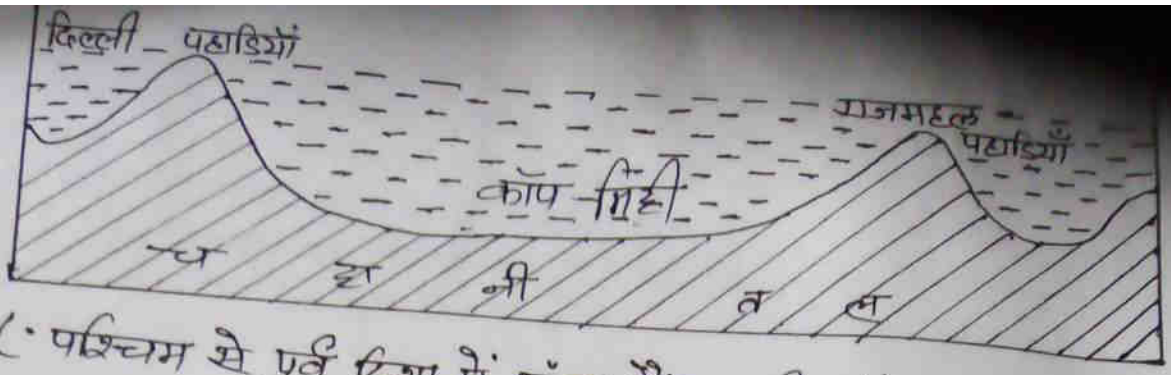

('पश्चिम से पूर्व दिशा में गंगा मैदान की कॉप का खण्ड')

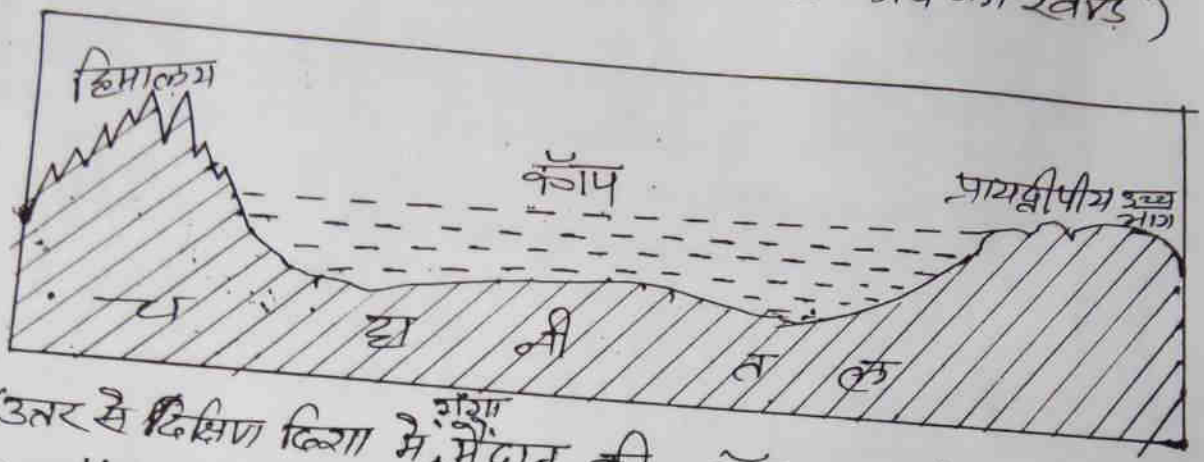

(उत्तर से दक्षिण दिशा में गंगा मैदान की कॉप खण्ड)

Agriculture Region of Extra-Peninsular India :—

भारतीय विशाल मैदान को उसकी धरातलीय विशेषताओं के आधार पर निम्न उपविभागों में बांटा जा सकता है

→ पंजाब-हरियाणा मैदान
→ राजस्थान का मैदान
→ गंगा का मैदान
→ असम की घाटी।

• पंजाब-हरियाणा का कृषि प्रदेश :—

इस कृषि प्रदेश को सतलज-यमुना को दोआब विभाजक कहते है जिसके दोआब में कृषि किया जाता है। यहाँ सतलज, व्यास, रावी आदि नदियाँ बहती है। यहाँ के 80% भाग खेती की जाती है। इसके उत्तरी और पश्चिमी जिलों की अपेक्षा दक्षिणी-पूर्वी जिलों में कृषि भूमि का प्रतिशत अधिक मिलता है। जिंद जिले में सबसे अधिक 88.2 तथा रोपड़ जिले में सबसे कम मिलता है।

इस मैदान की प्रमुख विशेषता कृषि फसलों की विविधता का होना है। अरबाद्य की अपेक्षा खाद्यान फसलों का महत्व अधिक है। पिछले दो दशकों से व्यापारिक फसलों विशेष रूप

राजस्थान का मैदान :

यहाँ की कृषि में खाद्यानों की प्रधानता है। यह खाद्य 47·7 लाख हेक्टेयर पर आया जाता है तथा कुल उत्पादन 41·65 लाख टन तक होता है। जौ यहाँ की प्रमुख फसल है। यह 10 लाख हेक्टेयर उत्पादन 2595 kg होता है। गेहूँ का उत्पादन प्रमुख रूप से गंगानगर, हनुमानगढ सीकर, झुंझनू, पाली बीकानेर जिलों में होता है।

व्यापारिक फसलों में गन्ना, कपास, तिलहन प्रमुख फसले है। कपास व गन्ना का उत्पादन श्रीगंगानगर में बराबर बढ़ रहा है।

गंगा का मैदान :-

यह मैदान उत्तर प्रदेश, बिहार, और पश्चिम बंगाल राज्यों के 3·57 लाख वर्ग km भूभाग पर फैला है। यहाँ की प्रमुख नदी गंगा है। दाँये किनारे पर इसको प्रमुख सहायक नदियाँ यमुना और सोन है जबकि बायें किनारेपर चम्बल, गंडक, और कोसी प्रमुख सहायक नदियाँ है। इस मैदान पर नदियों द्वारा लाई गई निक्षेपित मिट्टी बिछी है जो कृषि के लिए उपजाऊ है। इस मैदान का 3 उपविभाग में बांटा गया है।

- ऊपरी गंगा का का मैदान
- मध्यवर्ती "
- निम्न "

I ऊपरी गंगा का मैदान :-

यह मैदान मध्य व गंगा मैदान की अपेक्षा फसलों में अधिक विविधता रखता है। कृषि व फसलों में खाद्यान फसलों की प्रधानता है। कुछ कृषि भूमि के 85% भूभाग पर इसका उत्पादन होता है। गेहूँ चावल, मोटे अनाज, व चना प्रमुख खाद्यान फसल है। गन्ना, तिलहन व कपास प्रमुख व्यापारिक फसल है।

फसल प्रदेश

गन्ना और कपास का महत्व बढ़ने लगा। 1950-51 में कुल कृषित ... 78% भाग पर खाद्यान्न फसलें उगायी जाती थी जिनका प्रतिशत ... 1980-81 में 62% रह गया।

फसलों के यहाँ दो प्रमुख मौसम है। (1) खरीफ फसल जिसका समय जून-अगस्त से Sept-Dec तक रहता है। इसकी प्रमुख फसलें - बाजरा, मक्का, ज्वार, कपास, चावल व गन्ना है। (2) रबी फसल, जिसका समय Oct-Nov से April-May तक रहता है। इसकी प्रमुख फसलें गेहूँ, चना, जौ और सरसो है।

गेहूँ इस मैदान की सबसे महत्वपूर्ण फसल है। एक-चौथाई भूमि पर इसका उत्पादन होता है। इसका क्षेत्रफल 55.3 लाख हैक्टेर है। सिंचित क्षेत्रों में इसका विस्तार अधिक है। अपरबारी दोआब, बिस्त-जालन्धर दोआब, हरियाणा के पूर्वी जिले इसके प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है।

पंजाब हरियाणा कृषि प्रदेश।

चावल इस मैदान की दूसरी महत्वपूर्ण फसल है। इसका उत्पादन लगभग 360 लाख हैक्टेयर की भूमि पर किया जाता है। यह दलदली तट, व नहर द्वारा सिंचित भाग की प्रमुख फसल है। प्रति हैक्टेयर उत्पादन की दृष्टि से पंजाब का स्थान देश पहला है।

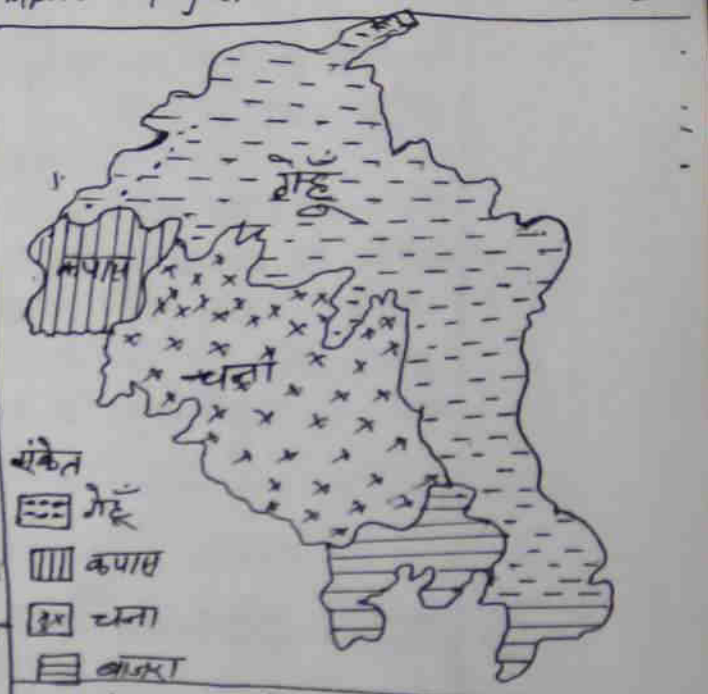

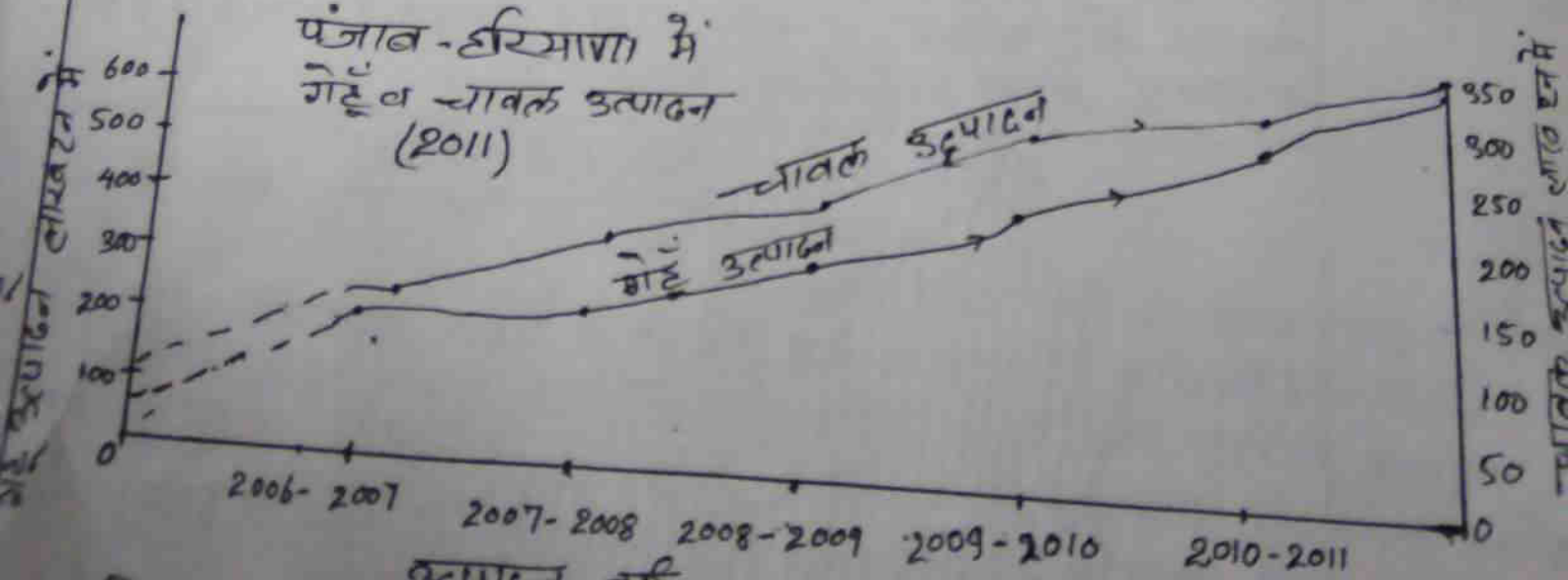

स्रोत: :—

गेहूँ प्रदेश का विस्तार अपर दोआब, यमुना पार प्रदेश के मथुरा जिला, पश्चिमी व दक्षिणी-पश्चिमी रुहेलखण्ड मैदान, पश्चिमी अवध और कानपुर जिलों में मिलता है।

मध्यवर्ती गंगा का मैदान :-

यह मैदान ऊपरी व निम्न गंगा मैदान के बीच मध्यवर्ती स्थिति रखने के कारण फसल उत्पादन में विविधता रखता है। यह सम्पूर्ण रूप से यहाँ समस्त भूमि का 75% कृषि योग्य, 13% कृषि अयोग्य व शेष 12% कृषि के लिए सुलभ नहीं है। यहाँ लगभग 70% भूमि पर कृषि की जाती है।

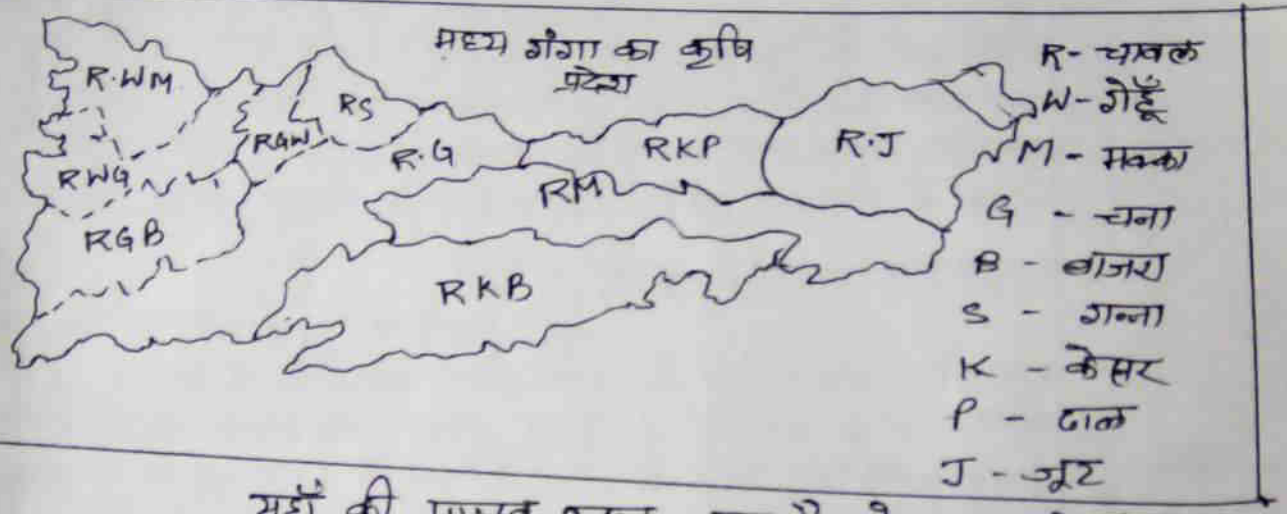

यहाँ की प्रमुख फसल चावल है जो कुल कृषि भूमि के 32% भूभाग पर उगाया जाता है। चावल की पैदावार उत्तर से पूर्व की ओर वर्षा बढ़ने के साथ-साथ बढ़ती जाती है। दक्षिण व दक्षिण पश्चिम में इसका महत्व कम है।

~~अन्य~~ गेहूँ रबी की प्रमुख फसल है। यह पश्चिमी भाग से लेकर पूर्व में दरभंगा व मुंगेर जिले तक केवल दोमट मिट्टी से युक्त भूमि पर उगाया जाता है। दरभंगा के पूर्व इसका महत्व समाप्त हो जाता है।

दाल यहाँ पर व्यापारिक स्तर पर उगायी जाती है। अरहर, मूंग, मसूर, खेसरी प्रमुख दालें हैं। दालें इस मैदान की कृषित भूमि के 25% भूभाग पर उगाया जाता है। पूर्वी U.P. में अरहर का उत्पादन बहुत होता है। दक्षिण बिहार मैदान की रेतीली दोमट मिट्टी पर इसका उत्पादन होता है। शाहाबाद, गया, पटना, और मुंगेर जिले बिहार मैदान की 70% दालें प्रदान करते हैं। ~~अ~~ यह महत्व पूर्वी U.P. में गोरखपुर, बस्ती, देवरिया, वाराणसी आजमगढ़ जिलों का है। तिलहनों का उत्पादन भी इस मैदान में वृहद स्तर पर किया जाता है। पूर्णिया, शाहाबाद, गया, चम्पारण, देवरिया, गोरख आजमगढ़, जौनपुर, गाजीपुर, प्रमुख तिलहन उत्पादक जिले हैं।

गन्ना इस मैदान की महत्वपूर्ण व्यापारिक फसल है। पूर्वी U.P. तथा बिहार मैदान के पश्चिमी व दक्षिणी-पश्चिमी भूभागों पर वृहद क्षेत्र पर उगाया जाता है।

निम्न गंगा का कृषि प्रदेश :—

मैदान के लगभग 60% जनसंख्या कृषि कार्यों में लगी है तथा कुल भूमि के 65% भूभाग पर कृषि की जाती है। धरातलीय दशा, मिट्टी, वर्षा की मात्रा व सिंचाई सुविधाओं में अंतर का प्रभाव कृषि पर पड़ता है जिनके का[रण] इसमें प्रादेशिक विभिन्नतायें पाई जाती है। यहाँ वर्षा पर्याप्त होती है लेकिन सु सुनिश्चित कृषि उत्पादन के लिए सिंचाई की साधनों की आवश्यकता पड़ती सिंचाई सुविधायें अभी भी यहाँ अपर्याप्त है। दामोदर घाटी परियोजना मयु योजना व फरक्का बांध के निर्माण के कारण सिंचाई सुविधाओं पर्याप्त विक हुआ है।

चावल यहाँ की प्रमुख फसल है जो कु कृषि भूमि के 75% भूभाग पर तथा सकल कृषित भूमि के 85% भूभाग पर का उत्पादन होता है। अन्य फसलों में तिल, सरसों, मूंगफली, चाय तम्बा आदि है। इनका महत्व चावल के बाद दूसरा है। ऊंचा भूमि पर इसका उ होता है जिसका प्रयोग पशुचारण के लिए भी किया जाता है।

असम घाटी कृषि प्रदेश :—

कृषि यहाँ की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है एक ओर यह घाटी के अधिसंख्य लोगों को रोजगार प्रदान करती है, वहीं ओर अनेक उद्योगों के लिए कच्चा माल प्रदान करती है। यहाँ के कुल भूमि 84% भाग पर कृषि की जाती है। कृषि में खाद्य फसलों की प्रधानता है। कुल कृ के 73% भूभाग पर खाद्यान 25% भूभाग पर व्यापारिक फसल शेष 2% भू साग-सब्जी, आलू-फल, कपास, आदि का उत्पादन किया जाता है।

प्रतिवर्ष यहाँ धान की खेती 20.74 लाख हेक्टेयर जाती है। धान का उत्पादन 48.8 लाख टन तथा उत्पादकता 1989 kg/हेक्टेयर है। उत्पादन 79300 हेक्टेयर भूमि पर तथा उत्पादकता 1010 kg/h है। खाद्यानों के बाद